

श्रीमद् आचार्य नेमिचन्द्र
सिद्धान्तचक्रवर्ति विरचित

लब्धिसार

प्रथमोपशम सम्यक्त्व
अधिकार



Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

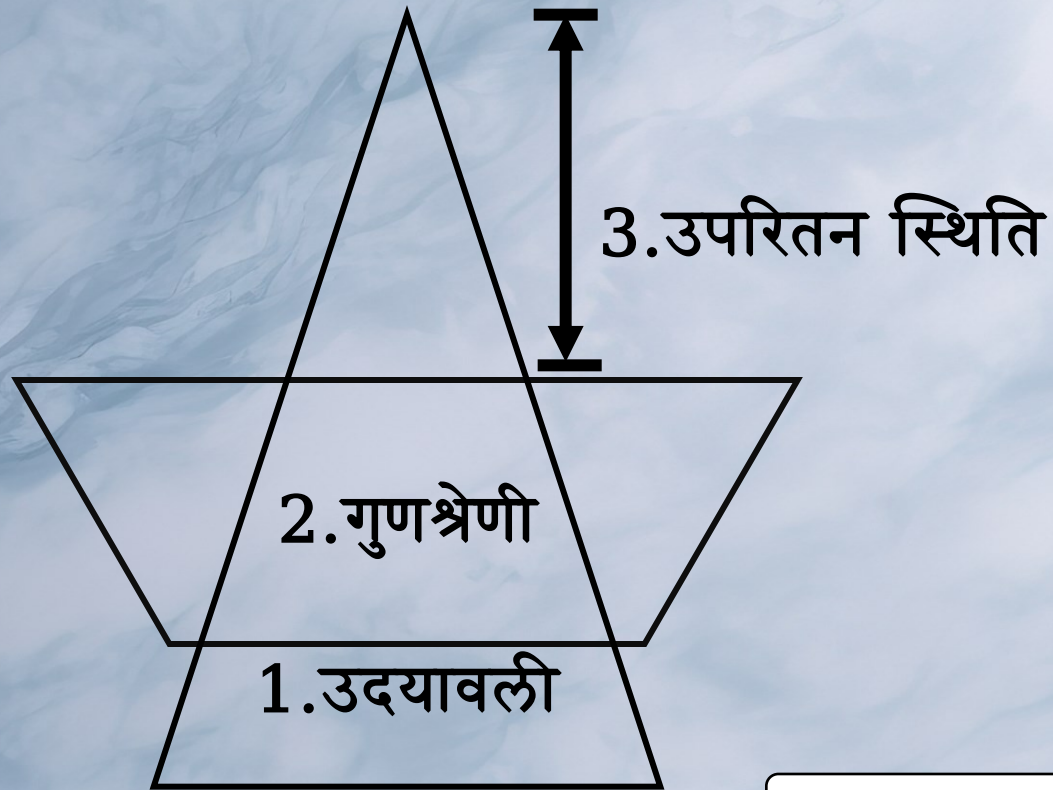
गुणश्रेणी निर्जरा

उदयाणमावलिम्हि य, उभयाणं बाहिरम्मि खिवणट्टं ।
लोयाणमसंखेज्जो, कमसो उक्कड्डणो हारो ॥68॥

- अन्वयार्थः- (उदयाणं) उदयरूप प्रकृतियों का द्रव्य (आवलिम्हि) उदयावली में (य) और (उभयाणं) दोनों का अर्थात् उदयरूप और अनुदयरूप प्रकृतियों का द्रव्य (बाहिरम्मि) उदयावली के बाहर (खिवणट्टं) निक्षेपण करने के लिए (लोयाणमसंखेज्जो) असंख्यात लोकमात्र (उक्कड्डणो हारो) अपकर्षण भागहार है (कमसो) 'क्रम से' – इस वचन से पल्य का असंख्यातवाँ भागमात्र भी भागहार है ॥68॥

अपकृष्ट द्रव्य

गुणश्रेणी के लिए ग्रहण किया गया द्रव्य अपकृष्ट द्रव्य कहलाता है क्योंकि यह अपकर्षण करके लिया गया है ।



यह अपकृष्ट द्रव्य 3 स्थानों पर बांटा जाता है -

उदयावली (यदि उदय वाली प्रकृति है)

गुणश्रेणी आयाम

गुणश्रेणी से ऊपर शेष उपरितन स्थिति

अपकृष्ट द्रव्य

यह अपकृष्ट द्रव्य कितना-कितना किस भाग को प्राप्त होता है - यह बताने के लिए भागहार बताते हैं ।

सर्व सत्त्व द्रव्य

सर्व सत्त्व द्रव्य
असंख्यात

सर्व सत्त्व का असंख्यात बहुभाग

एक भाग, अपकृष्ट द्रव्य

बहुभाग, स्वस्थान-स्थित द्रव्य

अपकृष्ट द्रव्य

अपकृष्ट द्रव्य
असंख्यात

अपकृष्ट द्रव्य का
असंख्यात बहुभाग द्रव्य

अपकृष्ट
द्रव्य का
विभाग

एक भाग द्रव्य

उपरितन स्थिति में निक्षेपण
के लिए

अपकृष्ट द्रव्य
असंख्यात × असंख्यात लोक

अपकृष्ट द्रव्य के एकभाग का
असंख्यात लोक बहुभाग द्रव्य

एक भाग का एक भाग द्रव्य,
उदयावली के लिए

एक भाग का बहुभाग द्रव्य,
गुणश्रेणी के लिए

अर्थ संदृष्टि

सर्व सत्त्व द्रव्य

$$\frac{\text{सर्व सत्त्व}}{\partial}$$

अपकृष्ट द्रव्य

$$\frac{\text{सर्व सत्त्व}}{\partial} \times (\partial - 1)$$

स्वस्थान स्थित
बहुभाग सत्त्व द्रव्य

$$\frac{\text{सर्व सत्त्व}}{\partial} \times \frac{(\frac{p}{\partial} - 1)}{\frac{p}{\partial}}$$

अपकृष्ट द्रव्य का
बहुभाग द्रव्य,
उपरितन स्थिति में

$$\frac{\text{सर्व सत्त्व}}{\partial} \times \frac{1}{\frac{p}{\partial}}$$

अपकृष्ट द्रव्य
का एक भाग

$$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\frac{p}{\partial} \times \equiv \partial}$$

उदयावली में
देय द्रव्य

$$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\frac{p}{\partial}} \times \frac{(\equiv \partial - 1)}{\equiv \partial}$$

गुणश्रेणी में
देय द्रव्य

भागहार

| किसका ? | भागहार का प्रमाण | संदृष्टि |
|--------------|---------------------------------------|---------------|
| उदयावली का | असंख्यात लोक | $\equiv 0$ |
| गुणश्रेणी का | $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ | $\frac{प}{0}$ |
| अपकर्षण का | $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ | ओ |

ओक्कड्डिदइगिभागे, पल्लासंखेण भाजिदे तत्थ ।
बहुभागमिदं दब्बं, उव्वरिल्लिठिदीसु णिक्खिवादि ॥69॥

• अन्वयार्थः- (ओक्कड्डिदइगिभागे) अपकर्षित किए एक भागप्रमाण द्रव्य में (पल्लासंखेण भाजिदे) पल्य के असंख्यातवें भाग से भाग देने पर (तत्थ) वहाँ (इदं बहुभागं दब्बं) यह बहुभाग-प्रमाण द्रव्य (उव्वरिल्लिठिदीसु) उपरितन स्थिति में (णिक्खिवादि) निक्षेपण करता है ॥69॥

सेसिगिभागे भजिदे, असंखलोगेण तत्थ बहुभागं ।
गुणसेठीए सिंचदि, सेसिगिभागं च उदयम्हि ॥70॥

- अन्वयार्थः- (सेसिगिभागे) शेष रहे एक भाग में (असंखलोगेण) असंख्यात लोक से (भजिदे) भाग देने पर (तत्थ बहुभागं) वहाँ बहुभाग (गुणसेठीए) गुणश्रेणि में (सिंचदि) देता है (च) और
- (सेसिगिभागं) शेष रहा एक भाग (उदयम्हि) उदयावली में देता है ॥70॥

सर्व सत्त्व द्रव्य = स ०१२-



स

= समयप्रबद्ध

०

= जघन्य समयप्रबद्ध को योगगुणकार से गुणा किया जिससे उत्कृष्ट समयप्रबद्ध आया ।

१२-

= डेढ़ गुणहानि से कुछ कम ($८ \times \frac{3}{2} = १२$) ।
कुछ कम करने के लिए '-' की संदृष्टि की है ।

सर्व सत्त्व द्रव्य

= समयप्रबद्ध $\times \frac{3}{2}$ गुणहानि- होता है ।

अतः सत्त्व द्रव्य
की यह संदृष्टि है

स ०१२-

मिथ्यात्व के द्रव्य की संदृष्टि

मोहनीय का द्रव्य
(लगभग सातवाँ भाग)

$$\frac{\text{स ० १२-}}{७}$$

सर्वघाति का द्रव्य
(अनंतवाँ भाग)

$$\frac{\text{स ० १२-}}{७ | ख}$$

मिथ्यात्व का द्रव्य
(17वाँ भाग)

$$\frac{\text{स ० १२-}}{७ | ख | १७}$$

आगे इसी द्रव्य को गुणश्रेणी में दिखाते हैं ।

इसे सरलता के लिए 'मिथ्यात्व द्रव्य' — ऐसा लिखेंगे ।

मिथ्यात्व द्रव्य

अपकृष्ट द्रव्य

बहुभाग सत्त्व द्रव्य

$$\frac{\text{मिथ्यात्व द्रव्य}}{\text{ओ}}$$

$$\frac{\text{मिथ्यात्व द्रव्य}}{\text{ओ}} \times (\text{ओ} - 1)$$

अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग

$$\frac{\text{मिथ्यात्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial}}$$

$$\frac{\text{मिथ्यात्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial}} \times \left(\frac{\text{प}}{\partial} - 1\right)$$

अपकृष्ट द्रव्य का बहुभाग, उपरितन स्थिति में देय

एकभाग -
उदयावली में देय

$$\frac{\text{मिथ्यात्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial} \times \equiv \partial}$$

$$\frac{\text{मिथ्यात्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{\text{प}}{\partial} \times \equiv \partial} \times (\equiv \partial - 1)$$

बहुभाग -
गुणश्रेणी में देय

अंक संदृष्टि

मानाकि सर्व सत्त्व द्रव्य = 4,00,000

अपकर्षण भागहार = 10, $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}} = 10$, असंख्यात लोक = 100

अपकृष्ट द्रव्य = $\frac{\text{सत्त्व द्रव्य}}{\text{अपकर्षण भागहार}} = \frac{400000}{10} = 40,000$

सर्व निषेकों से अपकर्षण करके प्राप्त द्रव्य = 40,000

यह अपकृष्ट द्रव्य तीन स्थानों पर दिया जाता है ।



उपरितन स्थिति में देयद्रव्य

$$= \frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{पल्लय असंख्यात}} \times \left(\frac{\text{पल्लय}}{\text{असंख्यात}} - 1 \right)$$

$$= \frac{40000}{10} \times (10 - 1) = \frac{40000}{10} \times 9$$

$$= 36000$$

40000 में से बहुभाग द्रव्य (36000) गुणश्रेणी के ऊपर के निषेकों में निक्षिप्त किया जायेगा ।

शेष बचा $40,000 - 36,000 = 4000$ द्रव्य उदयावली और गुणश्रेणी में दिया जायेगा ।

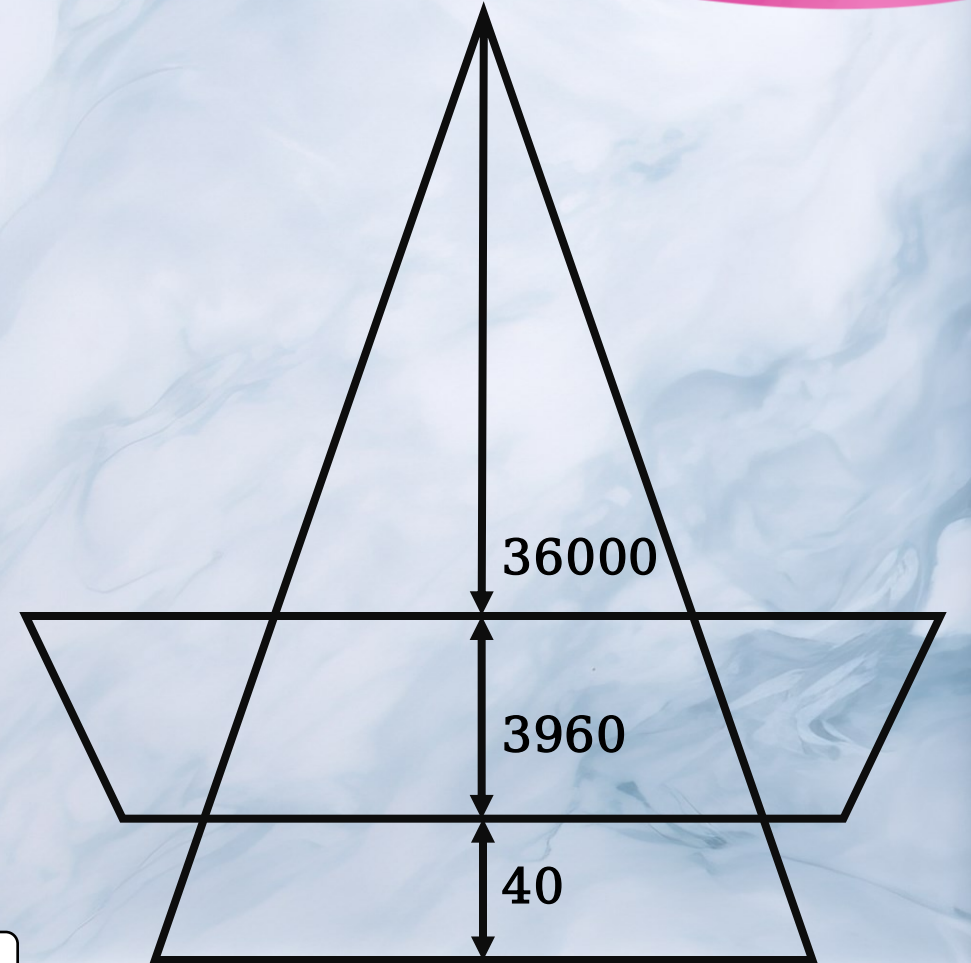
उदयावली में देय द्रव्य

$$= \frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग}}{\text{असंख्यात लोक}}$$
$$= \frac{4000}{100} = 40$$

गुणश्रेणी में देय द्रव्य

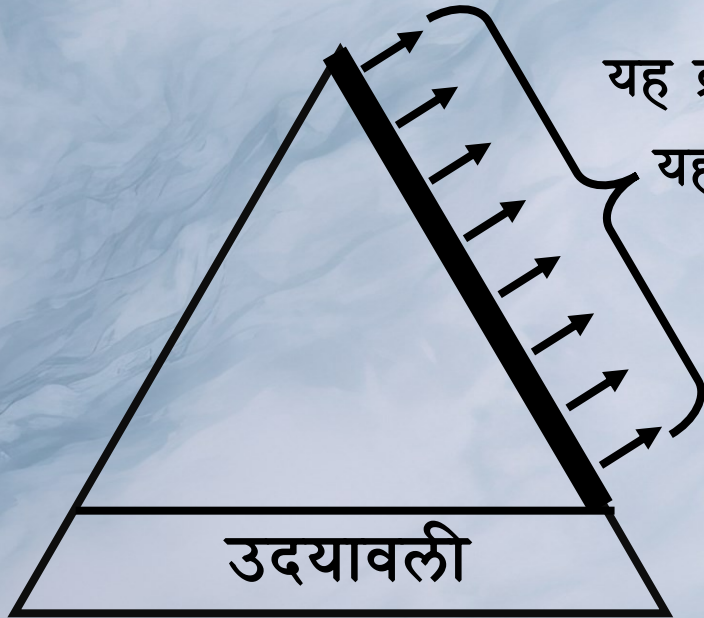
$$= \frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य का एकभाग}}{\text{असंख्यात लोक}} \times$$
$$(\text{असंख्यात लोक} - 1)$$
$$= \frac{4000}{100} \times (100 - 1) = 40 \times 99$$
$$= 3960$$

अपकृष्ट द्रव्य का बंटवारा





प्रश्न – अपकृष्ट द्रव्य कहाँ से ग्रहण किया है ?



यह द्रव्य अपकृष्ट द्रव्य है ।
यह इन सर्व निषेकों से
ग्रहण किया है ।

प्रत्येक निषेक से ग्रहण किया द्रव्य एक
अतिस्थापनावली छोड़कर नीचे सर्व निषेकों में
दिया जाता है ।

उत्तर – उदयावली के ऊपर सर्व
निषेकों में से अपकर्षण करके
अपकृष्ट द्रव्य आया है ।

किसी एक स्थितिविशेष से ही
द्रव्य नहीं लिया है ।

सब निषेकों में से असंख्यातवाँ
भाग ग्रहण किया है ।

उदयावलिस्स दब्बं, आवलिभजिदे दु होदि मज्झधणं ।

रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयहारेण ॥71॥

मज्झिमधणमवहरिदे, पचयं पचयं णिसेयहारेण ।

गुणिदे आदिणिसेयं, विसेसहीणक्कमं तत्तो ॥72॥

- अन्वयार्थः- (उदयावलिस्स दब्बं) उदयावली के (उदयावली में देने योग्य) द्रव्य में (आवलिभजिदे दु) आवली से भाग देने पर (मज्झधणं) मध्यधन (होदि) होता है।
- (रूऊणद्धाणद्धेणूणेण णिसेयहारेण) एक कम अध्वान के आधे से कम निषेकहार से (मज्झिमधणं) मध्यमधन में (अवहरिदे) भाग देने पर (पचयं) प्रचय (चय) आता है।
- (पचयं) चय में (णिसेयहारेण गुणिदे) निषेकहार से गुणा करने पर (आदिणिसेयं) प्रथम निषेक (उदयावली के प्रथम समय में देने योग्य द्रव्य का प्रमाण) आता है।
- (तत्तो) उसके अनन्तर (विसेसहीणक्कमं) क्रम से एक-एक चय कम दिया जाता है।

॥71-72 ॥

उदयावली में द्रव्य देने का विधान

अंक संदृष्टि - सर्व देय द्रव्य = 400, गच्छ = 8

निषेकहार = गच्छ \times 2 = 8 \times 2 = 16

सूत्र

अंक संदृष्टि

$$\text{मध्यम-धन} = \frac{\text{सर्व देय द्रव्य}}{\text{गच्छ}}$$

$$\text{मध्यमधन} = \frac{400}{8} = 50$$

$$\text{चय} = \frac{\text{मध्यमधन}}{\text{निषेकहार} - \frac{\text{गच्छ} - 1}{2}}$$

$$\text{चय} = \frac{50}{16 - \frac{8-1}{2}} = \frac{50}{16 - \frac{7}{2}} = \frac{50}{12.5} = 4$$

$$\text{प्रथम निषेक} = \text{चय} \times \text{निषेकहार}$$

$$\text{प्रथम निषेक} = 4 \times 16 = 64$$

$$\text{अंतिम निषेक} = \text{प्रथम निषेक} - (\text{गच्छ} - 1) \times \text{चय}$$

$$\begin{aligned} \text{अंतिम निषेक} &= 64 - (8 - 1) \times 4 \\ &= 64 - 7 \times 4 = 64 - 28 = 36 \end{aligned}$$

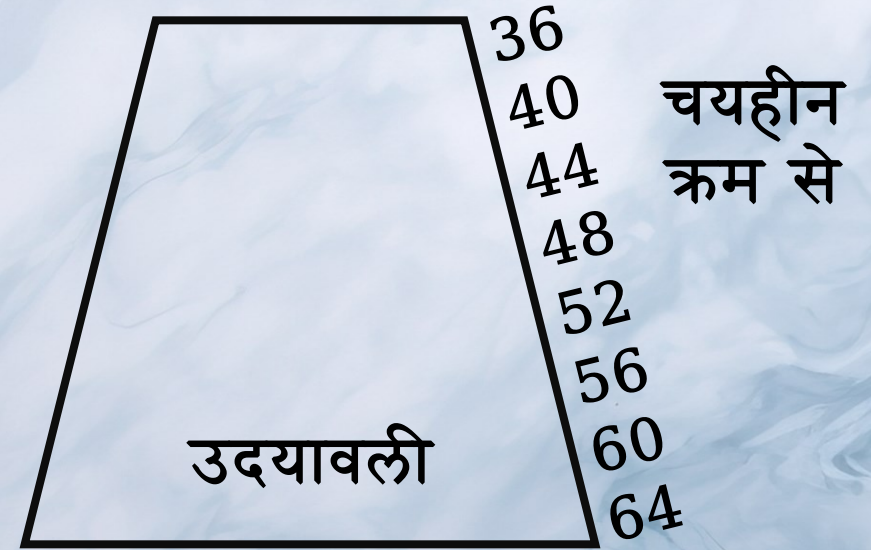
उदयावली में देय द्रव्य

यह उदयावली में देय द्रव्य चयहीन क्रम से दिया जाता है ।

यह 400 देय द्रव्य 8 निषेकों में इस तरह बांटा जाएगा –

क्योंकि सामान्यतः निषेक रचना चयहीन क्रम से होती है ।

गुणश्रेणी के अतिरिक्त सर्वत्र ऊपर-ऊपर चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।





उदयावली द्रव्य की अर्थ संदृष्टि

उदयावली में देय
द्रव्य

$$= \frac{\text{सा०१२-}}{७ | ख | १७ | ओ | \frac{प}{०} | \equiv ०}$$

(इसे संक्षेप में आगे
'उदयावली देय द्रव्य' लिखेंगे)

गच्छ

$$= \text{आवली} \mid \text{इसकी संदृष्टि} = ८$$

निषेकहार

$$= \text{आवली} \times 2 = १६$$

मध्यमधन

$$= \frac{\text{उदयावली देय द्रव्य}}{८}$$

चय

$$= \frac{\text{उदयावली देय द्रव्य}}{८ \mid १६ - \frac{८-1}{2}}$$

प्रथम निषेक

$$= \frac{\text{उदयावली देय द्रव्य} \mid १६}{८ \mid १६ - \frac{८-1}{2}}$$

अंतिम निषेक

$$= \frac{\text{उदयावली देय द्रव्य} \mid १६ - (८ - 1)}{८ \mid १६ - \frac{८-1}{2}}$$

मध्यमधन वाले सूत्र कब प्रयोग करते हैं?

जहाँ एक गुणहानि पूरी प्राप्त नहीं होती, वहाँ द्रव्य को शेष समयों में इन सूत्रों के अनुसार बांटा जाता है ।

यहाँ उदयावली के ऊपर यद्यपि निषेक हैं, तथापि वहाँ गुणहानि में द्रव्य चयहीन क्रम से नहीं देना है ।

इसलिए उदयावली से ऊपर गुणहानि नहीं प्राप्त है ।

इसलिए उपर्युक्त सूत्रों के अनुसार द्रव्य बांटा है ।

ओकड्ढिदग्धि देदि हु, असंखसमयपबद्धमादिग्धि ।
संखातीतगुणक्कममसंखहीणं विसेसहीणकमं ॥73॥

- अन्वयार्थः- (ओकड्ढिदग्धि) अपकर्षित द्रव्य में से (आदिग्धि) गुणश्रेणी के प्रथम निषेक में (असंखसमयपबद्धं) असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण द्रव्य (देदि हु) देता है।
- (उसके अनन्तर गुणश्रेणि शीर्षपर्यन्त) (संखातीत-गुणक्कमं) असंख्यात गुणित क्रम से देता है।
- (उसके बाद उपरितन स्थिति में) (असंखहीणं) असंख्यातगुणा हीन, उसके बाद में (विसेसहीणकमं) चयहीन क्रम से देता है

॥73॥

गुणश्रेणी में द्रव्य देने का विधान

गुणश्रेणी में देय द्रव्य को गुणश्रेणी आयाम के आदि निषेक से अंतिम निषेक तक असंख्यात गुणा-असंख्यात गुणा क्रम से दिया जाता है ।

प्रथम निषेक में दिया गया द्रव्य असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण है ।

गुणश्रेणी में देय द्रव्य, अपकृष्ट द्रव्य का एक भाग ही है; बहुभाग नहीं, तथापि यह एकभाग द्रव्य अंतर्मुहूर्त प्रमाण एक छोटे आयाम में ही दिया जा रहा है । इसलिए एक-एक निषेक में असंख्यात समयप्रबद्ध द्रव्य प्राप्त होता है ।

गुणश्रेणी के अंतिम निषेक को गुणश्रेणी शीर्ष कहते हैं । द्वितीयादि निषेक से शीर्ष पर्यंत द्रव्य असंख्यात गुणा-असंख्यात गुणा द्रव्य दिया जाता है ।

गुणश्रेणी आयाम में द्रव्य का बंटवारा

माना कि
अपकृष्ट द्रव्य = 8500,
गुणश्रेणी आयाम = 4,
असंख्यात = 4

| शलाका | निषेक द्रव्य |
|------------------------|--------------------|
| प्रथम निषेक की शलाका | 1 |
| द्वितीय निषेक की शलाका | $1 \times 4 = 4$ |
| तृतीय निषेक की शलाका | $4 \times 4 = 16$ |
| चतुर्थ निषेक की शलाका | $4 \times 16 = 64$ |
| कुल शलाका | 85 |

गुणश्रेणी आयाम में देय- द्रव्य

$$\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{कुल शलाका}} = \frac{8500}{85} = 100 \text{ गुणकार का प्रमाण}$$

इस गुणकार से प्रत्येक समय की शलाकाओं से गुणा करने पर प्रत्येक निषेक में देय द्रव्य आता है।

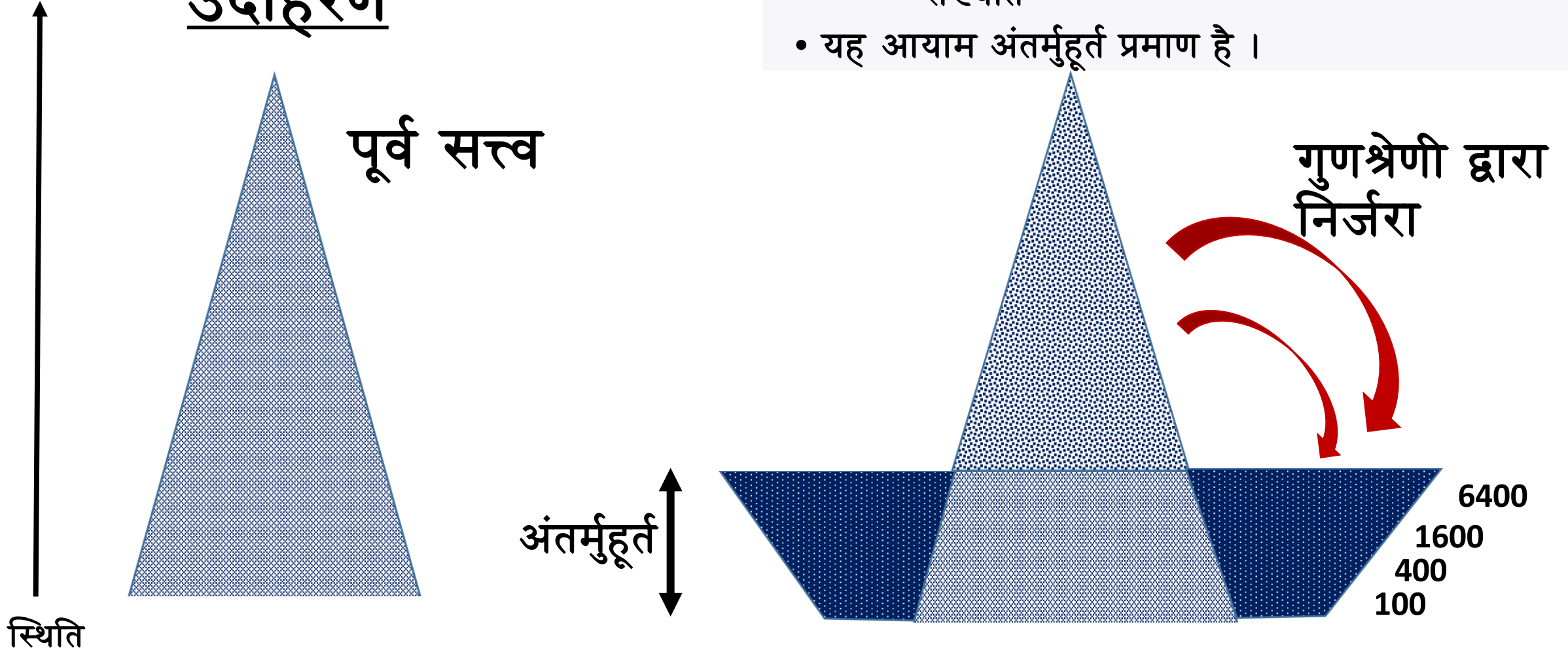
| गुणश्रेणी का द्रव्य | निषेक द्रव्य |
|-------------------------------|------------------------|
| प्रथम निषेक में दिया द्रव्य | $1 \times 100 = 100$ |
| द्वितीय निषेक में दिया द्रव्य | $4 \times 100 = 400$ |
| तृतीय निषेक में दिया द्रव्य | $16 \times 100 = 1600$ |
| चतुर्थ निषेक में दिया द्रव्य | $64 \times 100 = 6400$ |
| कुल द्रव्य | 8500 |


गुणश्रेणी निर्जरा

गुणश्रेणी का आयाम

- अपूर्वकरण का काल + अनिवृत्तिकरण का काल +
अनिवृत्तिकरण का काल
संख्यात
- यह आयाम अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ।

उदाहरण





निषेकों
में दिये
द्रव्य का
अल्प-
बहुत्व

उदयावली के अंतिम निषेक में दिये द्रव्य से, गुणश्रेणी के प्रथम निषेक में दिया द्रव्य असंख्यात गुणा है ।

प्रथम निषेक से शीर्ष पर्यंत दिया द्रव्य असंख्यात गुणा है ।

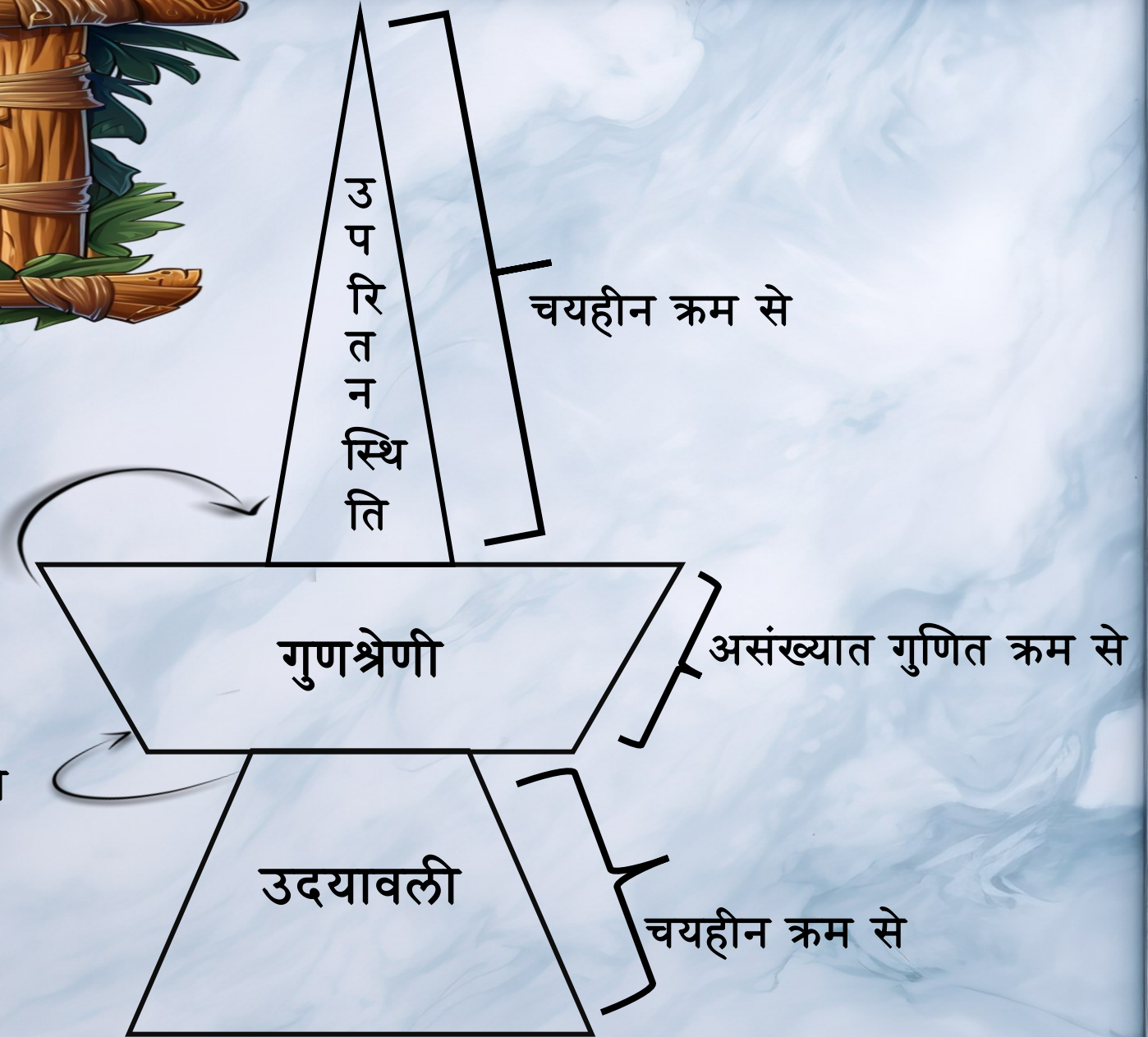
शीर्ष से उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक में दिया गया द्रव्य असंख्यात गुणा हीन है ।

प्रथम निषेक से ऊपर सर्वत्र चयहीन क्रम से द्रव्य दिया है ।

गुणश्रेणी में द्रव्य देने का विधान

गुणश्रेणी के अंतिम निषेक से असंख्यात गुणा कम द्रव्य देता है ।

उदयावली के अंतिम निषेक से असंख्यात गुणा द्रव्य देता है



उपरितन स्थिति में द्रव्य देने का विधान

उपरितन के प्रथम निषेक में देय द्रव्य

$$= \frac{\text{उपरितन स्थिति में देय द्रव्य}}{\frac{3}{2} \text{ गुणहानि} +}$$

चय

$$= \frac{\text{प्रथम निषेक देय द्रव्य}}{2 \text{ गुणहानि}}$$

एक-एक चय घटाते हुए क्रमशः उपरितन स्थिति में द्रव्य दिया जाता है। प्रत्येक गुणहानि में चय आधा-आधा हो जाता है।

पडिसमयमोक्कडुदि, असंखगुणियक्कमेण सिंचदि य ।
इदि गुणसेढीकरणं, आउगवज्जाण कम्माणं ॥74॥

- अन्वयार्थः- (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (असंखगुणियक्कमेण) असंख्यातगुणित क्रम से (ओक्कडुदि) अपकर्षण करता है (य) और (सिंचदि) निक्षेपण करता है।
- (इदि) इस प्रकार (आउगवज्जाण) आयु छोड़कर (कम्माणं) शेष कर्मों का (गुणसेढीकरणं) गुणश्रेणी करण जानना चाहिए ॥74॥

गुणश्रेणी निर्जरा

इस प्रकार गुणश्रेणी में प्रत्येक समय द्रव्य का निक्षेपण होता है ।

विशुद्धि के बढ़ने से प्रत्येक समय का अपकृष्ट द्रव्य असंख्यात गुणा होता है ।

अपकृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा होने से गुणश्रेणी में निक्षिप्त द्रव्य भी पूर्व की अपेक्षा असंख्यात गुणा हो जाता है ।

यह गुणश्रेणी गलितावशेष होने से प्रत्येक समय में गुणश्रेणी का आयाम कम होता जाता है ।

यह गुणश्रेणी आयु को छोड़कर शेष सर्व कर्मों की होती है ।

➤ Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)

➤ For updates / feedback / suggestions, please contact

➤ Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com

➤ www.jainkosh.org

➤ ☎: 94066-82889

• इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।